JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# सहयोगात्मक अधिगम की स्टेड विधिरूएक अभिनव पहल

**डॉक्टर शिखा त्रिपाठी एसोसिएट प्रोफेसर एकेएस विश्वविद्यालय सतना मध्य प्रदेश**

**शोध सारांश**. प्रभावी शिक्षण के लिए हमेशा से ही विद्यालयों में शिक्षकों को दक्षता पर ध्यान देना आवश्यक रहा है शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं इस कार्य हेतु अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करती है शिक्षण कार्य यदि व्यवस्थित है तो छात्रों में आसानी से उपलब्धियां आसानी से प्राप्त की जा सकती है। प्रस्तुत अध्ययन सहयोगात्मक अधिगम की एक विधि स्टेड विधि के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करता है इसमें शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्र अध्यापकों को न्यायादर्श के रूप में चुना गया है । जिन्हें प्रयोग समूह में बांटा गया है प्रयोग समूह एवं नियंत्रण समूह को सांख्यिकी विधियो द्वारा परीक्षित कर शोध के निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं । सहयोगात्मक शिक्षण की यह विधि उपयोगी विधि है । जिसे शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर लागू किया जा सकता है। यह आधुनिक शिक्षण विधियों का नवीनतम स्वरूप है।

**कुंजी शब्द**.सहयोगात्मकए शिक्षणए स्टेड विधिए अधिगम ।

**प्रस्तावना**.मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और विद्यालय एक लघु समाज है जहां शिक्षक द्वारा ही सामाजिक मान्यताओं परंपराओं रीति रिवाज के बारे में सिखाया और समझाया जाता है अधिगम एवं शिक्षक की प्रक्रिया में छात्र अच्छा नागरिक बनने के लिए तैयार होता है समाज की पहली विशेषता के तौर पर पारस्परिक निर्भरता को रखा जाता है जो आपसी सहयोग पर आधारित है जिसके माध्यम से व्यक्ति हर परिस्थिति के अनुसार स्वयं को भी किया करता है इसी उद्देश्य से विद्यालयों एवं महाविद्यालय में भी सहयोगात्मक शिक्षण विधियां की संकल्पना की गई और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या सीएफ 2005 की रूपरेखा में एक सुझाव दिया गया जिसमें ऐसी शिक्षण विधियां का चुनाव किया जाए जोए विद्यार्थियों को अपने विचार प्रकट करने एअपने ज्ञान को सहपाठियों के साथ बांटने एव ज्ञान की खोज करने का अवसर प्राप्त कर सके तथा छात्र क्रियाशील अधिगमकर्ता के रूप में कार्य करने में सक्षम हो। एनसीईएफ 2005 का यह सुझाव निर्मितवाद उपागम की देन है। जो छात्र को कक्षा कक्ष में स्वयं संलग्न रहकर ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सक्रियता से भाग लेने हेतु प्रेरित करता है। निर्मित वाद उपागम के इस सुझाव को सहयोगात्मक अधिगम विधियां (कोऑपरेटिव लर्निंग मेथड) एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करती है। इनका निर्माण सामाजिक विज्ञान की प्रामाणिक सिद्धांत के अनुसार किया गया है। जो कि एएक ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अलग-अलग व अकेले कार्य करने की अपेक्षा मिलजुल कर कार्य करने पर अधिक अच्छे परिणाम प्राप्त करने पर सहमत है।

## सहयोगात्मक अधिगम का अर्थ

सहयोगात्मक अधिगम एक ऐसा उपागम है जिसमें विद्यार्थी छोटे-छोटे समूहों में एक दूसरे को सिखाने में मदद करने 2403563_534697_532_534के लिए कार्य करती हैं। स्लेविन के अनुसार. सहयोगशील अधिगम संरचना एक ऐसी स्थिति का निर्माण करती है जिसमें समूह के सदस्य अपने व्यक्तिगत लक्ष्यो को तभी प्राप्त कर सकते हैं जबकि

पूरा समूह सकल हो। जॉनसन एवं अन्य (1991) के अनुसार. सहयोगात्मक अधिगम के पांच प्रमुख तत्व है . धनात्मक या सकारात्मक अन्योन्याश्रिताए प्रत्यक्ष अंतः क्रिया एव्यक्तिगत जवाब देहीए सामाजिक कौशलों का समुचित उपयोग तथा समूह संसाधन। कैगन (1989 )नामक विद्वान ने सहयोगात्मक अधिगम की निम्नलिखित विधियो को बताया है। जैसे. स्टेड एटीजीटीए राउंड रोबिनए राउंड टेबल एग्रुप इन्वेस्टिगेशन आदि। इन सभी विधियो का प्रशासन अलग-अलग तरीके से किया जाता है ।लेकिन केंद्रीय विचार में सभी विधियां समान लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समूह में कार्य करने की पपक्षधर है

**शोध का उद्देश्य**.प्रस्तुत शोध अध्ययन में सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में सहयोगात्मक अधिगम की स्टेड विधि के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

**परिकल्पना**.प्रस्तुत शोध में सहयोगात्मक अधिगम की स्टेट विधि से पढ़ाई गए एवं परंपरागत विधि से पढ़ाया गए छात्र अध्यापकों की( निर्मित वाद के उपागम के संबंध में ) शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। परिकल्पना के रूप में लिया गया है।

**शोध विधि**.प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान की प्रायोगिक विधि का प्रयोग किया गया है जिसमें समूह को दो भागों प्रयोग एवं नियंत्रित समूह में लेकर परीक्षण किया गया है।

**न्यायादर्श**.

न्याय दश के रूप में ब्लॉक नागौर की शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययन 40 छात्र अध्यापकों का चयन प्रासंगिक न्याय दर्शन विधि द्वारा किया गया है जिसमें 20 छात्र अध्यापक प्रयोगिक समूह एवं 20 छात्र अध्यापक नियंत्रित समूह के रखे गए हैं।

**शोध उपकरण**.आंकड़ों की संकलन हेतु प्रश्नावली तैयार की गई है जिसका पूर्व एवं पश्चिम परीक्षण के रूप में प्रयोग किया गया है इसमें निर्मित वाद उपागम के तत्वों के आधार पर 100 अंकों के 41 प्रश्नों को रखा गया है तथा सांख्यिकीय विधि द्वारा परीक्षण किया गया है।

**विश्लेषण एवं व्याख्या**

दोनों समूहों के परीक्षण से स्पष्ट है कि पूर्व परीक्षण में टी मूल्य 0.3563 है तथा मानक विचलन प्रयोग समूह का 8.1047 तथा नियंत्रित समूह का 8.69 है जो यह सार्थक अंतर को प्रदर्शित नहीं करता जबकि पश्च प्रशिक्षण में प्रयोग समूह का मानक विचलन 4.7696 तथा नियंत्रित समूह में 8.1 04 है एवं टी मूल्य 22.693 है जो सार्थक अंतर प्रदर्शित करता है। अतः दोनों समूह के परीक्षण से पता चलता है कि परंपरागत विधि द्वारा अध्ययन से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता किंतु पश्च परीक्षण के आधार पर दोनों समूहों की शैक्षिक उपलब्धियां में बहुत अंतर दिखाई देता है जो स्टेड विधि की सार्थकता को सिद्ध करता है।

**निष्कर्ष**. अतः प्रस्तुत शोध के परीक्षण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि छात्र अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में परंपरागत शिक्षण विधि के स्थान पर सहयोगात्मक अधिगम की स्टेट विधि सार्थक रूप से अधिक प्रभावी है जिसके कारण छात्रों में परस्पर सहयोग की प्रवृत्ति का विकास होता है और जो प्रत्येक स्तर की शिक्षा व्यवस्था के लिए उपयोगी है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

पांडेए एन एन एवं वी कौशलरू "किशोर 2009 सहयोग सील कक्षा एवं गणित में संज्ञानात्मक उपलब्धि " आधुनिक शिक्षा एनसीईआरटी एअंक 3ए जनवरीए पेज 144. 153

अग्रवालए सुनील कुमार एवं त्यागीए एस के (2008)रू ष् दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की विज्ञान अभिवृत्ति पर कंप्यूटर आधारित शिक्षण का प्रभाव” इंडियन जर्नल ऑफ़ टीचर एजुकेशनए अन्वेषिका अंक 5ए जूनए पेज नंबर 1

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या निर्माण 2005रू राष्ट्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली पेज 17

श्रीवास्तवए कुमकुम (2008) ‟परंपरागत एवं निर्माणात्मक परिप्रेक्ष्य” एइंडियन जनरल ऑफ टीचर एजुकेशन अन्वेषिकाए अंक 5 पेज 1ए जून।

शर्माए हेमंत लता एवं शर्माए सविता (2008)रू ‟कोऑपरेटिव लर्निंग रूहाईवे तो लर्निंग तो लाइफ टुगेदरएष् इंडियन जर्नल ऑफ़ टीचर एजुकेशन अन्वेषिकाए अंक 5ए जूनए पेज नंबर 1

कुमारए राजेश एवं गुप्ता एसी के (2009)रू एंन इंट्रोडक्शन तो कॉग्निटिव कंस्ट्रक्टिविज्म” इन एजुकेशन जनरल ऑफ़ इंडियन एजुकेशनए अंक 35ए नवंबर एपेज 3

अनूप पूनिया एवं कुमावतए आरती (2014) रू ष्सहयोगात्मक अधिगम तथा विज्ञान में संज्ञानात्मक उपलब्धिएष् नवीन शोध संसार इंटरनेशनल रिकॉर्ड जनरल रिसर्च जनरलए अक्टूबर.दिसंबर अंक 2ए पेज 208. 209